Prabhat Khabar (Date: - 19/12/2019)

एलान • नंदकिशोर, थरूर समेत 23 अन्य को साहित्य अकादमी पुरस्कार

सुपौल के मनीष को अकादमी पुरस्कार

संवाददाता ▷ नयी दिल्ली/सुपौल

सुपौल के कुमार मनीष अरविंद को मैथिली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है. उनको यह पुरस्कार 'जिनगीक ओरिआओन करैत' कविता संग्रह के लिए मिला है.

साहित्य अकादमी ने 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की बुधवार को घोषणा की. हिंदी के लिए नंदकिशोर आचार्य, अंग्रेजी के लिए सांसद कांग्रेस डॉ शशि थरूर व उर्दू के लिए प्रो शाफे किदवई का चयन किया गया है. इनका जन्म 15 अक्तूबर 1964 को सुपौल जिले के बसावनपट्टी मे हुआ. मैथिली की पहली किताब 'मिझायल सूर्य क नगर (कविता)' किसुन संकल्प लोक, सुपौल से 2001 में छपी, जबकि हिंदी में कविताओं की पहली किताब 'और कितनी यातनाएं' 1995 में छपी. अब तक हिंदी और मैथिली में इनकी 10 किताबें आ चुकी हैं. मैथिली की नयी धारा के कवि, कथाकार और संस्मरण लेखक मनीष साहित्य अकादमी की परामर्श दातृ समिति के सदस्य भी हैं. उन्होंने कई किताबों का सम्पादन भी किया है. इससे पहले इन्हें मैथिली सृजन सम्मान • बाकी पेज 17 पर

साहित्य अकादमी में मैथिली के प्रतिनिधि डॉ प्रेम का इस्तीफा, कहा-पुरस्कार के चयन में रैकेट सक्रिय

दरभंगा. पुरस्कार के एलान के साथ ही साहित्य अकादमी में मैथिली के प्रतिनिधि डॉ प्रेम मोहन मिश्र ने इस्तीफा दे दिया है. उन्होंने पुरस्कार दिये जाने की प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए संस्था के सचिव पर गंभीर आरोप भी लगाया है. अकादमी के सचिव के श्रीनिवासन राव को मेल के माध्यम से भेजे गये अपने इस्तीफे मे उन्होंने कहा है कि उन्हे परामर्श मंडल के संयोजक पद से मुक्ति दी जाये. इस्तीफे के बारे में पूछे जाने पर डॉ मिश्र ने कहा कि पुरस्कार के चयन में पूरा रैकेट सक्रिय है. पुस्तक का चयन व उसका निर्णय गुप्त प्रक्रिया के तहत होना चाहिए. जूरी के नाम भी • बाकी पेज 17 पर

"डॉ मिश्र के इस्तीफे के मामले को बोर्ड के समक्ष रखा जायेगा. जो आरोप लगाया जा रहा है, उस पर अकादमी के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष ही कुछ बता सकते हैं.

के. श्रीनिवासन राव, सचिव

Prabhat Khabar (Date: - 19/12/2019)

आकलन • राज्य की प्रजनन दर सभी राज्यों की तुलना में होगी सर्वाधिक

2035 तक राष्ट्रीय औसत से कम होगी शिशु मृत्यु दर

- 2036 तक बिहार की जनसंख्या में कई परिवर्तन आ जायेंगे

संवाददाता ▸ पटना

स्वास्थ्य मंत्रालय के राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग द्वारा जारी आकलन के अनुसार 2036 तक बिहार की जनसंख्या में कई परिवर्तन आ जायेंगे. जनसंख्या आयोग द्वारा जारी आकलन में बताया गया है कि 2031-35 तक राज्य का नवजात मृत्यु दर (आएमआर) घटकर 26.9 तक पहुंच जायेगी. उस दौरान देश का राष्ट्रीय नवजात मृत्यु दर औसतन 30 रहेगी. नवजात मृत्यु दर 1000 जीवित रूप से जन्म लेनेवाले उन बच्चों का होता है, जो अपना पहला जन्मदिन नहीं मना पाते हैं. जहां राज्य के नवजातों की मृत्यु दर में कमी आयेगी, तो दूसरी ओर राज्य का प्रजनन दर 2035 तक 2.38 पर होगा.

एक दंपती के संतानों की औसत संख्या ही प्रजनन दर होती है. 2031-35 तक देश में बिहार ही ऐसा इकलौता राज्य होगा जिसका सकल प्रजनन दर दो से अधिक होगी.

राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का आकलन

जनसंख्या आयोग द्वारा जारी आकलन में बताया गया है राज्य की वर्तमान जनसंख्या (जनगणना 2011) में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 918 है. वर्ष 2035 तक प्रति हजार पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या बढ़कर 935 हो जायेगी. इसके बावजूद उस समय भी राज्य का लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत 957 से कम ही होगा. राज्य सरकार द्वारा जनसंख्या नियंत्रण को लेकर राज्य की हर पंचायत में प्लस टू स्कूलों का संचालन किया जा रहा है. बालिकाओं में शिक्षा स्तर अधिक होने का असर आबादी नियंत्रण से जुड़ा है. जनसंख्या का दबाव का असर भूमि पर भी दिखेगा.

राज्य में प्रति किमी पर रहते हैं 1106 लोग

जनगणना 2011 के अनुसार राज्य में प्रति वर्ग किलोमीटर में 1106 लोग निवास करते हैं वहीं वर्ष 2036 तक प्रति वर्ग किलोमीटर में रहनेवाले लोगों की संख्या बढ़कर 1578 हो जायेगी. आकलन में बताया गया है कि राज्य की 15-24 वर्ष की जनसंख्या 2031 तक बढ़कर 2.6 करोड़ हो जायेगी. इस वर्ष की आयु वर्ग के लोगों में वर्ष 2036 में गिरावट होगी और यह 2.5 करोड़ हो जायेगी.

Hindustan (Date: - 19/12/2019)

बकरी फार्म के लिए युवाओं को मिलेंगे और मौके

पटना | हिन्दुस्तान ब्यूरो

राज्य में बकरी फार्म की स्थापना करने को बेरोजगार युवाओं के लिए अवसर अब भी हैं। सरकार ने बकरी फार्म खोलने के लिए आवेदन देने की अवधि और बढ़ा दी है। बकरी फार्म के लिए सरकार सामान्य वर्ग के लोगों को भी 50 प्रतिशत अनुदान दे रही है।

सूत्रों के अनुसार सरकार ने बेरोजगार युवकों को बकरी फार्म खोलने के लिए और भी अवसर देने का निर्णय लिया है। स्वरोजगार के इस पैटर्न से कम पढ़े-लिखे युवक भी हर माह बढ़िया आमदनी पा सकते हैं। पिछली बार कई जिलों में ऐसे पात्र युवक आवेदन देने में पिछड़ गए। कुछ जगह बेरोजगारों को समय पर जानकारी नहीं मिल सकी। अब ऐसे लोगों को पुनः अपना बकरी फार्म खोलने का अवसर

राहत

- बकरी फार्म की स्थापना के लिए आवेदन देने की अवधि बढ़ायी गई
- जिलों में पात्र आवेदकों के आने के लिए सरकार ने अवधि बढ़ायी
- प्रक्रिया को सरल बनाने को आफलाइन आवेदन देने की भी व्यवस्था

मिला है। पिछली बार 8 दिसंबर तक ही ऑनलाइन आवेदन दिए जा सकते थे। अब यह मियाद करीब ढाई महीने और बढ़ा दी गई है। बकरी फार्म के लिए अब 20 फरवरी तक आवेदन दिए जा सकते हैं। इस बार 20 बकरियों और 40 बकरियों वाला फार्म खोलने के लिए आफलाइन आवेदन स्वीकार किए जाएंगे। खास बात यह है कि इन फार्मों में पैदा होने वाली संतति को राज्य के गरीब पशुपालकों के बीच वितरित किया जाएगा। खुली निविदा के माध्यम से उस नस्ल के बकरों की खरीद निर्धारित दर पर की जाएगी। इन फार्मों की स्थापना पर सामान्य जाति के लाभुकों को 50 प्रतिशत और दलित वर्ग के लाभुकों को 60 प्रतिशत का अनुदान मिलेगा। 20 बकरों के फार्म की स्थापना पर दो लाख रुपए खर्च होंगे और इसमें एक लाख रुपए का अनुदान मिलेगा। 40 बकरियों के फार्म खोलने पर 4 लाख का खर्च होगा, जिनमें 2 लाख रुपए का अनुदान मिलेगा। आवेदकों के पास कम से कम 1800 वर्गफुट की जमीन होनी चाहिए। सरकार इस योजना के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा देना चाहती है, साथ ही मांस के उत्पादन और पशु जन्य प्रोटीन की उपलब्धता भी बढ़ाना चाहती है। इससे बकरी पालकों की आय में भी वृद्धि होगी।

Hindustan (Date: - 19/12/2019)

समस्तीपुर के रोहन ने एप बना आसान की पढ़ाई

समस्तीपुर | रामबाबू सुमन

समस्तीपुर जिले के मोहनपुर प्रखंड के रसलपुर गांव के रोहन कुमार सिंह ने कम उम्र में ही वेब की दुनिया में बड़ा मुकाम हासिल करने में सफलता पायी है। उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दूसरों की पढ़ाई की राह आसान करने के लिए मोबाइल एप बनाया है। 19 साल के रोहन ने अभी 12वीं तक की ही पढ़ाई पूरी की है। उसके पिता पवन कुमार सिंह सेना में अधिकारी हैं। मां रेखा गृहिणी हैं। रोहन ने मेरठ में प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद दानापुर से 12वीं की पढ़ाई पूरी की। इसी दौरान उपन्यासकार गया निवासी सत्यपाल चन्द्र के संपर्क में सोशल मीडिया के माध्यम से आया। उन्हीं की प्रेरणा से उसने एप बनाने की ठानी।

रोहन (फाइल फोटो)

19 साल की उम्र में ही रोहन ने बनाया मोबाइल एप

40 लोग फिलहाल मैग टैप कंपनी में करते हैं काम

मैग टेप नामक एप में मिलती हैं कई सुविधाएं

मैग टेप के नाम के एप में पिक्चर डिक्शनरी, ब्राउजिंग, पीडीएफ व वर्ड डाक्युमेंट रीडिंग के अलावा समाचार पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है। इसकी खासियत यह है कि जिस शब्द के बारे में जानकारी नहीं होती है उसे इस ऐप पर ब्राउजिंग करने पर पिक्चर के साथ उसकी डिटेल जानकारी मिलती है। वहीं पीडीएफ या वर्ड फाइल को हिन्दी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिन्दी में आसानी से बदल देता है।

12 भाषाओं में मिलती है जानकारी

मैग टैप एप देश की 12 भाषाओं में है। नेपाली भाषा को भी इसमें शामिल किया है। उर्दू भाषा में किसी भी तरह की जानकारी मिलने के कारण इसे पड़ोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान में भी लोग डाउनलोड कर रहे हैं। इस ऐप में गेम खेलने की भी सुविधा है। उसने बताया कि मैग टैप कंपनी स्टार्टअप इंडिया के तहत रजिस्टर्ड हैं। मोबाइल ऐप के काम में उसका छोटा भाई अभिषेक भी मदद करता है।

18 नवंबर को एप किया लांच : रोहन ने बताया कि उसने एक से 10 नवंबर तक गूगल प्ले स्टोर में इस एप को डाल पहले इसका परीक्षण किया। जिन लोगों ने इस एप को डाउनलोड किया उनसे फीडबैक लेकर एप में तकनीकी कमी दूर की। उसके बाद 18 नवम्बर को अपने जन्मदिन के दिन इसकी लांचिंग की। अब तक 2 लाख से अधिक लोग इस एप को डाउनलोड कर चुके हैं। उसने अपनी कंपनी भी बना रखी है, जिसका मुख्यालय मुंबई के गोरेगांव में है।